© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न

अंकिता मिश्रा
117/P/347 हितकारी नगर काकादेव,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश : मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थितियों के सूक्ष्म चित्र मिलते हैं | इनकी कहानियों में स्त्री के खंडित होते जीवन, सेक्स और कुंठाओं के फलस्वरूप टूटते संबंधों, परिवार में स्त्री की भूमिका आदि दर्शाई गयी है | इनके द्वारा लिखी गयी कहानियों की स्त्री-पात्र जड़ और रूढ़िगत व्यवहारों को छोड़कर नवीन चेतना के साथ सामने आती हैं | मृदुला गर्ग ने समाज में स्त्रियों द्वारा भोगे गए यथार्थ को ज्यों का त्यों अपनी कहानियों में चित्रित कर दिया है | आधुनिकता के परिणामस्वरूप स्त्रियों की दशाओं में हुए सकारात्मक परिवर्तनों के साथ ही नकारात्मक परिवर्तनों को भी इन कहानियों के माध्यम से समझा जा सकता है| मृदुला गर्ग की कहानियां नारी-चेतना के विविध आयामों से परिचित कराती हुई नए भावबोध को संपोषित करती हैं| उनके कथा-साहित्य का सर्वाधिक सशक्त पक्ष नारी अस्मिता के प्रश्नों को रेखांकित करना रहा है|

मुख्य शब्द : मृदुला गर्ग, स्त्री- अस्मिता, नारी चेतना, आधुनिकता|

प्रस्तावना : स्वस्थ अर्थों में नारी अस्मिता अथवा नारी चेतना का अर्थ है - स्त्री पुरुष के बीच के संबंध को बनाए रखते हुए भी पारंपरिक बंधनों से मुक्ति| नारी की बनी बनाई सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक छवि के तिलिस्म को तोड़ने वाली दृष्टि ही नारी चेतना है | मृदुला गर्ग का मानना है कि 'फेमिनिज्म' का सही अनुवाद 'नारी-चेतना' है |

मृदुला गर्ग के कहानी लेखन का प्रारंभ 1975 के आसपास शुरू होता है | यह वह समय था जब नई कहानी की लहर और उसका दौर लगभग समाप्त प्राय हो चुके थे| आलोचकों ने भी उनकी कहानियों

को आधुनिक भावबोध से संपन्न कहानियां कहा है| यह आधुनिक भाव बोध ही मृदुला गर्ग की कहानियों को अन्य समकालीन महिला कहानीकारों की कहानियों से अलग दर्ज करता है|

मृदुला गर्ग की कहानियों को देखें तो स्पष्ट दिखता है, कि वह स्त्री-विमर्श संबंधी विवाद का झंडा लेकर बिल्कुल नहीं चली हैं, बल्कि उनकी कहानियों में 'स्त्री' एक व्यक्ति के रूप में आई है| और एक सामान्य व्यक्ति की तरह ही उसकी आकांक्षाओं, अनुभूतियों को उन्होंने अपनी कहानियों में खुलकर व्यक्त किया है| इनकी कहानियों में स्त्रियों का चित्रण अपनी पूर्णता एवं यथार्थ रूप में मिलता है| यह रूप सहज और सरल है| यह जबरन समाज को दिखाने के लिए रचा गया कृत्रिम रूप नहीं है| मृदुला गर्ग की कहानियों में हर वर्ग से संबंधित स्त्री पात्र हैं| असभ्य और विशिष्ट कहे जाने वाले उच्च वर्गों की स्त्रियां भी इनकी कहानियों की पात्र हैं तो साथ ही मध्यम वर्ग की तमाम बेड़ियों को तोड़ने की चाह रखने वाली स्त्रियां भी इनकी कहानियों में देखी जा सकती हैं | निम्न वर्गों की कामगार औरतें भी इनकी कहानियों में हैं, जिनके जीवन की विषम स्थितियों और उनकी अस्मिता से जुड़े सवालों के जवाब तलाश करने की कोशिश भी इन कहानियों में देखी जा सकती है | दिनेश द्विवेदी लिखते हैं "मृदुला गर्ग की कहानियां अपने भौगोलिक विस्तार, वर्गीय विविधता, रंगारंग चरित्रों के कारण ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उनमें जो भाव बोध तथा संवेदना उभर कर आती है, वह उन्हें हिंदी कहानी के महत्वपूर्ण विकास से जोड़ती है| यानी वे हिंदी कहानी के पिछले युग से आगे की कहानियां हैं |"[i]

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री अस्मिता : बदलते हुए समय के साथ स्त्रियों की स्थितियों में भी तमाम बदलाव आए हैं| स्त्रियां सामाजिक और आर्थिक रूप से अधिक स्वतंत्र हुई हैं तथा घरेलू मामलों में भी बराबर की हकदार होने लगी है| स्त्रियों की स्थितियों में आए इस तरह के अनेक बदलावों को मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है| कहानियों में स्त्री की दशा एवं दिशा को लेकर मृदुला गर्ग लिखती हैं "स्त्री और साहित्य का दुर्भाग्य था कि उदारता का नुस्खा देह से पतित नारी पर आजमाया गया, उस अभावग्रस्त स्त्री पर नहीं, जो व्यवस्था के कारण पीड़ित, वंचित और शोषित थी"[ii]

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्रियों से संबंधित इन तमाम पक्षों एवं विचारों को देखा जा सकता है| "हरी बिंदी" और "कितनी कैदें" उनके लेखन के प्रारंभिक दौर की कहानियां हैं| इन कहानियों ने उनके लेखन के प्रति पाठक वर्ग का ध्यान आकर्षित किया| उन्हीं कहानियों के प्रकाशन के बाद हिंदी जगत का ध्यान मृदुला गर्ग की और आकर्षित हुआ तथा उनकी कहानियों की चर्चा व्यापक स्तर पर होने लगी|

"कितनी कैदें" की नायिका मीना कॉलेज मैं पढ़ने वाली आधुनिक स्त्री है| पारंपरिक जीवन के बंधन उसे कैद के समान प्रतीत होते हैं | मीना कॉलेज में अपने मित्रों के साथ खूब मौज-मस्ती करती है, उनके साथ खाना-पीना उठना बैठना होता है परंतु बाद में वही मित्र नशे की स्थिति में उसके साथ धोखा करते हैं | यह बात जब उसके घर तक आती है तो उसके माता-पिता उसका विवाह कर देते हैं

| विवाह हो जाने के बाद वह अपने पति के साथ अतीत में घटी इस घटना को शेयर नहीं कर पाती, परंतु फिर भी उसके दिमाग में यह सब घूमता रहता है और अंत में जब लिफ्ट में फंस जाती है और उसे अपना जीवन समाप्त होता नजर आता है, तब वह अपने अतीत में घटी सभी घटनाओं को पति के सामने कह देती है - "हमारे गुट में करीब दस-बारह लोग थे | पाँच-छह लड़कियां और उतने ही लड़के | शाम को पूरा गुट मिलकर सैर सपाटे पर निकलता | कभी सिनेमा कभी नाच-गाना और कभी पिकनिक | पिकनिक होती तो सब मिलकर पॉट लेते | सिगरेट पीते | तंबाकू की नहीं, भांग-चरस की, क्यों हम यह सब लेते थे? उसकी कोई सफाई नहीं बस फैशन, नकल, मां-पिता जी को धोखा देने का थ्रिल | कुछ भी कह लो, कभी-कभी मैं अकेली भी किसी लड़के के साथ डेट पर जाती थी, पर अधिकतर हम लोग गुट बनाकर ही घूमते फिरते थे यूँ 'पॉट' लेने के बाद गुट में होना या अकेले होना एक ही बात थी |"[iii]

पति के सामने अपने अतीत का खुलासा कर देने के बाद वह अपने आप को मानसिक कैद से मुक्त मानने लगती है, लेकिन यह सब जानने के बाद उसका पति मनोज उसके साथ जीवन बिताने को लेकर असमंजस में पड़ जाता है –"उसने कसकर मनोज का हाथ थाम लिया, भावावेश में कांपते स्वर में कहा – 'लिफ्ट ही की नहीं, जिंदगी की कैद से निकल आई हूं'..... और मनोज सोच रहा था, यहां तक तो ठीक है, पर अब सवाल मौत नहीं, जिंदगी का है | क्या मैं इसकी पिछली जिंदगी के शिकंजों से बरी रह सकूंगा? इस औरत के साथ जी सकूंगा?"[i v] इस कहानी को पढ़ने के बाद कहा जा सकता है कि कैदों से निकलना वस्तुतः इतना आसान नहीं | एक कैद से निकलने के बाद हम कब दूसरी कैद में कैद हो जाते हैं, यह हमें भी पता नहीं चल पाता |

'हरी बिंदी' कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है, जो अपना एक पूरा दिन अपने लिए पति की अनुपस्थिति में अपने लिए जीती है | इस कहानी को पढ़ते हुए बार-बार जेहन में यह सवाल उठता है कि क्यों एक स्त्री को हमेशा पुरुष के ही अनुसार चलना पड़ता है? एक स्त्री को अपने अनुसार एक पूरा दिन बिताने को भी कभी नहीं मिलता | इस कहानी की नायिका पति की अनुपस्थिति में मिले एक दिन को अपने अनुसार जीना चाहती है | सुबह देर से उठने पर उसे आनंद का अनुभव होता है और सोचती है "ओह, सुबह देर तक सोने में कितना आनंद आता है | राजन होता है तो सुबह छह-साढ़े छह से ही खटर-पटर शुरू हो जाती है | चाय-नाश्ते की तैयारी, दोपहर का खाना साथ में और आठ बजे बजे राजन दफ्तर के लिए रुखसत |.... पर आज वह स्वतंत्र है | जो चाहे करे | उसने शरीर को ढीला छोड़ दिया और दोबारा सोने की तैयारी करने लगी |"[v] इस कहानी में एक विवाहित स्त्री की सामाजिक परिस्थिति को देखा जा सकता है परिवार के बंधनों में जकड़ी स्त्रियां प्रायः थोड़ा सा समय भी अपने लिए नहीं निकाल पातीं | परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते करते वे स्वयं के जीवन के प्रति उत्साह खो देती हैं |

इनकी एक अन्य कहानी "डैफोडिल जल रहे हैं" हिंदी जगत में बहुत पठित और बहुत चर्चित कहानी रही है | इस कहानी में एक स्त्री के मन की तमाम परतों को बड़ी ही बारीकी के साथ खोला गया है | आलोचकों के अनुसार यह कहानी अपने समय का अद्भुत कथा प्रयोग रही है | मृदुला गर्ग की कहानियों का विश्लेषण करते हुए इस कहानी के सन्दर्भ में महेश दर्पण ने लिखा है "यहां स्त्री ऊपर से भावनात्मक आवेगों में भले ही नजर आती हो, लेकिन भीतर उतरने के लिए जिस मनोवैज्ञानिक समझ का होना जरूरी है, वह मृदुला गर्ग के कहानीकार के पास मौजूद तो प्रारंभ से हैं, लेकिन यहां आकर जैसे उसका संपूर्ण विकास नजर आता है |"[vi]

"लिली ऑफ़ द वैली" कहानी की नायिका लिली एक रूपवती और सुंदर लड़की है | वह उन्मुक्त विचारों वाली है, और अपनी पसंद से प्रेम विवाह करती है | परंतु विवाह के बाद उसे पता चलता है कि उसका पति एक निष्क्रिय और गुणहीन व्यक्ति है | वह एक दिखावा करने वाली स्त्री है जो अपनी खास मित्रों तक को अपने पति की खामियों के विषय में नहीं बताती और अपना सम्मान बचाए रखने के झूठे दिखावे के लिए वह अपने पति की ना कामयाबी को भी सबके सामने छुपाए रखती है |

आधुनिकता का पोषण करने वाली स्त्रियों के साथ ही मृदुला गर्ग की कहानियों में पारंपरिक ढंग से जीवन जीने वाली और समाज के नियम कानून को मानने वाली स्त्रियां भी मौजूद हैं | इनकी लिखी कहानी "दो एक फूल" की नायिका शांतम्मा भी इसी वर्ग की स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है | वह एक पारंपरिक महिला है, पति द्वारा अनेक तरह से पीड़ित किए जाने के बाद भी वह पति के प्रति विद्रोह नहीं करती | शांतम्मा पति द्वारा सिफलिस की बीमारी की शिकार भी हो जाती है | इस भयंकर बीमारी के कारण ही उसके बच्चे भी जन्म लेते ही मर जाते हैं और इसके लिए उसका पति उसे ही जिम्मेदार ठहराता है | अपने क्रोध और दुख को वह पत्नी की पिटाई करके उतारता है "वह खूब देर से घर लौटा, और आते ही भीतर बैठी शांतम्मा को खींचकर बाहर अहाते में ला पटका, और गालियां बकते बकते उसकी पीठ पर दनादन लाते मारने लगा | चुड़ैल, अभी कितने बच्चों को खाएगी, हरामजादी ! तेरे कर्म सड़े हैं, तेरा बदन सड़ा है, तेरा पाप फलता है, बच्चों की देह पर, हरामजादी, कुलटा ! डायन !"[vii]

यह शांतम्मा का दूसरा विवाह है, अपने पति के बारे में बताते हुए शान्तम्मा कहती है "पहला एक मरद था बाई | वो मेरे को छोड़ दिया तो इसको किया | यह फिर भी अच्छा है, वह तो रोज बाजार में जाता था, रोज दारु पी कर आता था और रोज-रोज मेरे को मारता था |"[viii] शांतम्मा को देखकर इस वर्ग की तमाम स्त्रियों के दुखों को समझा जा सकता है | शांतम्मा के इस चरित्र को नारी परंपरा की एक त्रासद और दुखद घटना कहा जा सकता है |

"पोंगल पोली" की सोनम्मा गांव की एक अनपढ़ लड़की है, परंतु वह अत्यंत स्वाभिमानी भी है | बाहर से आई एक स्त्री उसे यक्षिणी प्रतीत होती है | वह उससे अत्यंत प्रभावित होती है, परंतु जब वही स्त्री उसके गांव के तालाब के पानी को देखकर घृणा से छी छी करती है तब सोनम भी उससे घृणा करने लगती है "सभी बच्चे उस स्त्री से ब्रेड आदि कुछ ना कुछ सामान लेते रहते हैं, पर सोनम्मा, फकीरप्पा से कह देती है, तू ही खा, मुझे नहीं चाहिए |"[i x]

"मेरा" कहानी एक लंबी कहानी है | इसमें स्त्री का आत्मनिर्भर रूप अभिव्यक्त हुआ है | कहानी की नायिका 'नीता' और नायक 'महेंद्र' ने प्रेम विवाह किया है | महेंद्र इंजीनियर है और अमेरिका जाकर नौकरी करने का सपना पाले हुए है | वह चाहता है कि वे अभी संतान का दायित्व ना उठाएं परंतु असावधानीवश नीता गर्भवती हो जाती है | पति और पत्नी के बीच द्वंद्व का प्रारंभ इसी जगह से हो जाता है | महेंद्र चाहता है कि वह गर्भपात करवा ले परंतु वह मां बनना चाहती है | तमाम दबावों के बावजूद नीता मां बनने का निर्णय लेती है | वह निश्चय करती है कि अपनी संतान के पालन पोषण के लिए अतिरिक्त कार्य करेगी और उसे बेहतर जीवन देगी | एक स्त्री इस तरह का निर्णय लेने का साहस तभी कर सकती है, जब वह आत्म निर्भर और आर्थिक रूप से स्वाधीन हो | यह कहानी वर्तमान समय में मध्यवर्गीय परिवारों के नौकरी-पेशा स्त्री-पुरुषों के मध्य के द्वंद्व का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है | नीता का चरित्र अपनी साहसिकता (बोल्डनेस) की दृष्टि से प्रसंशनीय है | एक स्त्री की खोई हुई अस्मिता की उपलब्धि की यह कहानी एक कथाकार के रूप में मृदुला गर्ग की विशिष्ट उपलब्धि है |

"ग्लेशियर से" कहानी में एक स्त्री के आत्मालाप को दर्शाया गया है | यह कहानी अपने अलग ढंग के गठन के लिए भी जानी जाती है | चित्रात्मक भाषा के प्रयोग में मृदुला गर्ग का स्थान अपने समकालीन कहानीकारों में विशिष्ट है |

"तुक" कहानी में यह दर्शाया गया है कि पति से अलग दृष्टिकोण होने पर भी किस प्रकार स्त्री अपनी संवेदना और प्रेम के कारण पति से बंधी रहने के लिए विवश है | कहानी की नायिका 'मीरा' अत्यंत सुंदर है परंतु फिर भी पति के प्रेम को पाने में सफल नहीं है | पति का प्रेम पाने के लिए वह रोज तरह-तरह के प्रयास करती है परंतु फिर भी सफल नहीं हो पाती "मैं रोज नए तरीके से अपनी अवमानना करती, पारदर्शी नाइटी पहन कर दरवाजा खोलना, उसके सामने घुटनों पर गिरकर उसके जूते खोल देना, पैरों से लेकर चेहरे पर चुम्बनों की बौछार करना, उसकी गोदी में बैठकर अपने हाथों से उसे लजीज पकवानों के निवाले खिलाना, आंखों में आंसू भरकर ठंडी हवा में घुमाने की मनुहार करना, उसके सामने अपने जिस्म के हर खूबसूरत कोण का प्रदर्शन कर उसे निमंत्रण देना, सभी कुछ मैं करती थी |"[x] कहानी की नायिका के पास गाड़ी, बंगला, धन-दौलत सब कुछ है परंतु पति के प्रेम के बिना सब बेकार है | वह पति का प्यार पाने के लिए तरह-तरह के प्रयास करती रहती है | पति

की पसंद के अनुसार स्वयं को ढाल लेती है | परंतु पति के द्वारा वह एक खेलने की वस्तु बनकर ही रह जाती है | इस कहानी को पढ़ते हुए बहुत बार लगता है कि यह लेखिका की स्वयं की कहानी है, परंतु मीरा का नाम हो आते ही स्थितियां बदल जाती हैं |

"खाली" कहानी आधुनिक कामकाजी स्त्रियों के जीवन पर आधारित है | बदलते समय के साथ स्त्रियों में भी बदलाव आया है और वे पारम्परिक स्त्रियों की तरह विवाह के तुरंत बाद मां नहीं बनना चाहती हैं | इसी विचार को लेकर इस कहानी की रचना की गई है | आज की कामकाजी स्त्रियों को बच्चा पालना बोझ सा लगता है| कहानी की नायिका भी इन तमाम जंजीरों से मुक्त रहकर जीवन बिताना चाहती है |

"एक चीख का इंतजार" कहानी स्त्रियों की प्रसव वेदना के समय उनकी मानसिक स्थितियों को ध्यान में रखकर लिखी गई है | इस कहानी की नायिका 'मैं' प्रसव पीड़ा में होती है, परंतु उसकी कराह को सुनने वाला कोई नहीं है | 'मैं' का पति उसकी प्रसव से उठती हुई चीखों को सुनकर दुखी नहीं होता, बल्कि बड़ी खुशी से अपनी भाभी को बताता है कि "भाभी, मां कहा करती हैं, भगवान की कुदरत ही ऐसी है कि औरत को जितना कष्ट हो उतना ही मोह बच्चे से होता है |"[xi] इस कहानी में लड़का और लड़की के जन्म पर होने वाले भेदभाव को भी देखा जा सकता है |

"रेशम" कहानी स्त्री-जाति की अस्मिता की लड़ाई को स्वर देने वाली कहानी है | 'हेमवती' कहानी की नायिका है | 'हेमवती' के माध्यम से स्त्रियों की सामाजिक स्थितियों को दर्शाया गया है | पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रति पुरुष का रवैया किस प्रकार से उभर कर सामने आता है, यही बिंदु इस कहानी के केंद्र में है |

"बड़ा सेब काला सेब" कहानी के केंद्र में एक भारतीय उच्चकुलीन महिला की गाथा है, जो अमेरिका जैसे देश में जाकर स्वयं को वहां की संस्कृति और वहां के लोगों से तुलनात्मक रूप से जोड़ती हैं | यह कहानी एक यात्रा वृतांत की तरह प्रतीत होती है, जिसमें न्यूयॉर्क पूरी तरह से उभर कर आता है | 'काला एप्पल' नीग्रो अफ्रीकी का प्रतीक है | कहानी की नायिका 'वह' है जिसे सब के सब धोखेबाज, लुटेरे और डाकू ही प्रतीत होते हैं | कहानी की नायिका 'वह' उन से डर कर बार-बार अपने देवी देवताओं का स्मरण करती रहती है "हे भगवान ! वीर हनुमान ! सीताराम ! राधा-कृष्ण, भोले शंकर, अल्लाह, जीसस, मदद करो, इसे बतलाओ, चपाकुआं स्टेशन कहां है |"[xii] भारतीय महिलाएं विदेशों में किस प्रकार धोखा खाती हैं, इसका चित्रण कहानी में किया गया है | यह विदेशी सभ्यता के बीच नारी के भटकने की कहानी है|

"बीच का मौसम" कहानी संभ्रांत वर्ग की टूटी-फूटी महिलाओं के आचरण को रेखांकित करती है | राजश्री, पम्मी, चित्रा, माया और कहानी की नायिका आदि ऐसी स्त्रियां हैं, जो जीवन में वसंत की तरह

आनेवाले वसंत के छोटे अंतरालों को जीना चाहती हैं और इसका जश्न मनाती हैं | यह सब विवाहित नहीं हैं, और सोचती हैं कि आगे चलकर कोई बच्चा गोद ले लेंगी | जब यह सब नशे और सपने की स्थिति में होती हैं तो इन्हें अपने अपने दर्द, प्रेमी और रिश्ते याद आते हैं | शिप्रा से नायिका कहती है "हां पहले मैं थी फिर तू, अब कोई और है | बड़ी अफसर बनी फिरती है, छोड़ दिया ना एक दो टके के आदमी ने? आजकल, जो प्रेमिका है, हम दोनों से जवान है, समझी? साला! ना सही मर्द, बोतल तो है |"[xiii]

"अवकाश" कहानी में स्त्री के विभाजित व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है | इस कहानी की नायिका अपने पति और बच्चों को प्यार करते हुए भी किसी अन्य पुरुष के प्रति आकर्षित हो जाती है और उसके साथ रहना चाहती है "महेश, मैंने तुम्हें प्यार किया है, अभी भी करती हूँ | इसीलिए दो वर्ष से अपने को रोकती रही हूँ, अपने से लड़ती रही हूँ, अविरल, निरंतर, पर हर बार मेरी हार हुई है | जैसे मैं दो भागों में विभक्त हूँ, हारी हूँ, अपने ही इस नूतन रूप से | मैं क्या करूं.... प्यार किया नहीं जाता हो जाता है | वह मुझे खींचे लिए जा रहा है | मुझे माफ करो, मैं तुम्हें बहुत दुख दे रही हूं, पर मुझे जाने दो, मुझे जाना ही है, ओह ! महेश, मैं कुछ नहीं कर सकती |"[xiv] वास्तव में नायिका अजीब स्थितियों में घिरी हुई है, वह पति और प्रेमी में से किसी को भी छोड़ना नहीं चाहती, परंतु यह भी संभव नहीं है कि एकसाथ दोनों से जुडी रहे | इस तरह के विवाहेत्तर संबंध और असमंजस की स्थिति आधुनिक समाज में प्राय देखने को मिल जाती है |

निष्कर्ष : मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में जहां एक ओर स्त्री-वर्ग की विभिन्न कमजोरियों, निरंतर होते आ रहे उसके उत्पीड़न की कार्यों सहित पड़ताल की गई है, वहीं दूसरी ओर स्त्री-जीवन को सकारात्मक दिशा में ले जाने वाली तमाम संभावनाओं को भी रेखांकित किया गया है | मृदुला गर्ग के कथा-साहित्य में स्त्रियों के अनेक रूप अभिव्यक्त हुए हैं | भारतीय परंपराओं के अनुसार जीती हुई, पति को परमेश्वर मानकर पूजती हुई स्त्रियां भी उनकी कहानियों में दिखाई देती हैं, तो साथ ही पति की अनुपस्थिति में किसी दूसरे पुरुष के साथ आनंद का अनुभव करने वाली स्त्रियां भी इनकी कहानियों की पात्र बनकर आती है | मृदुला जी की कहानियों में समाज में रहने वाली हर तरह की स्त्री को देखा जा सकता है | वास्तव में उनकी कहानियों में आई स्त्रियां काल्पनिक पात्र नहीं है अपितु हमारे ही आसपास की स्त्रियां इन कहानियों की नायिका के रूप में चित्रित की गई हैं | मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री मन के तमाम रंग उकेर दिए हैं |

सन्दर्भ :

[i] मृदुला गर्ग व्यक्तित्व और कृतित्व, सं दिनेश द्विवेदी, पृष्ठ-1

[ii] चुकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, पृष्ठ-42

[iii] कितनी कैदें, संगति-विसंगति, मृदुला गर्ग, पृष्ठ-46

[iv] कितनी कैदें, संगति-विसंगति, मृदुला गर्ग, पृष्ठ-46

[v] हरी बिंदी, संगति-विसंगति, मृदुला गर्ग, पृष्ठ - 8

[vi] निरंतर और स्तरीय कहानी लेखन, महेश दर्पण, मृदुला गर्ग व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सं : दिनेश द्विवेदी, पृष्ठ-281

[vii] दो एक फूल (टुकड़ा टुकड़ा आदमी), मृदुला गर्ग, पृष्ठ-65

[viii] वही

[ix] टुकड़ा टुकड़ा आदमी पृष्ठ संख्या 23

[x] तुक, (ग्लेशियर से), मृदुला गर्ग, पृष्ठ-55

[xi] एक चीख का इंतजार, (ग्लेशियर से), मृदुला गर्ग, पृष्ठ-162

[xii] बड़ा सेब - काला सेब, (समागम), मृदुला गर्ग, पृष्ठ-87

[xiii] बीच का मौसम, (समागम), मृदुला गर्ग, पृष्ठ-109

[xiv] अवकाश, टुकड़ा टुकड़ा आदमी, मृदुला गर्ग, पृष्ठ-43